MITHILESH KUMAR MAHATHA
Dept of Political Slience
Adarsh college, Rajdhanwar
Sem- VI - 3B - party system in India

Scanned by CamScanner

प्र. भारत में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति प्रकृति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :-

राजनीतिक दल प्रतिनिधिक जनतंत्र का अटूट अंग होते हैं। जिसके बिना न तो सिद्धान्तों की संगठित अभिव्यक्ति हो सकती है, न नीतियों का व्यवस्थित विकास, न संसदीय निर्वाचन के संविधानिक साधन का अथवा अन्य किसी मान्यता प्राप्त ऐसी संस्था का नियमित प्रयोग जिसके द्वारा दल सत्ता प्राप्त करते है और उसे बनाए रखते है।

भारत में राजनीतिक दलों की कोई विकसित परम्परा नही रही है जिस तरह की ब्रिटेन तथा अमेरिका में है। फिर भी ब्रिटिश शासन काल के प्रारम्भिक दिनों में ही कुछ दलों की बुनियाद देखने को मिलती है। सार्वजनिक संगठन के रूप में पूना की सार्वजनिक सभा, मद्रास की महाजन सभा तथा कलकत्ता का भारतीय समुदाय सबसे प्राचीन संगठनों मे से है। ये सभी संगठन 18 वीं शताब्दी में हुए भारत के पुनर्जागरण का परिणाम था। जिसके फलस्वरूप लोगों को लगने लगा था कि गुलामी से मुक्ति, देश की समस्याओं का समाधान के लिए किसी संगठन का होना आवश्यक है और इसी आवश्यकता का परिणाम भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस जैसे संगठनों का उत्पत्ति होना और उसका राजनीतिक दल में परिणत होना है।

:- भारत में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति :-

भारत में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति को मुख्य रूप से पाँच धाराओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

प्रथम धारा :-

अखिल भारतीय स्तर पर 1885 में 72 राजनीतिक कार्यकर्ताओं सहित एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज I.C.S. अधिकारी ए. ओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना की। प्रारम्भिक समय में कॉंग्रेस का विकास राजनीतिक दल के रूप में नही वरन एक दबाव समूह के रूप में हुआ था जिसका

Scanned by CamScanner

उद्देश्य भारतीयों को गैर-सरकारी संसद के रूप में कार्य करना था। शुरू में इसे ब्रिटीश शासकों का समर्थन प्राप्त था, लेकिन थोड़े दिनों के बाद ही कांग्रेस द्वारा ब्रिटीश साम्राज्य की आलोचना तथा स्वराज की मांग ने ब्रिटीश शासकों का रुख बदल दिया। अब कांग्रेस ने प्रान्तीय चुनावों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया और धीरे-धीरे इस राजनीतिक संगठन के नेतृत्व में भारत ने स्वतंत्रता को प्राप्त किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस एक राजनीतिक दल के रूप में परिवर्तित हो गया। कांग्रेस की मुख्य विशेषता "सबको लेकर चलो" की रही है। इसलिए पामर ने कहा कि कांग्रेस का उदय एक छत-संगठन (umbrella organisation) के रूप में हुआ जिसका अर्थ है कि कांग्रेस ने सभी वर्गों, जातियों, सम्प्रदायों को मानने वालों को अपने में समा लिया।

दूसरी धारा:-

दूसरी धारा में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति का आधार साम्प्रदायवाद रही है। 1906 में सर सैय्यद अहमद खाँ के नेतृत्व में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की नींव पड़ी। जिसका उद्देश्य भारतीयों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति राजभक्ति पैदा करना था। इसी का परिणाम 1941 का विख्यात "पाकिस्तान प्रस्ताव" था। जिसने अन्ततः सम्प्रदाय के आधार पर पाकिस्तान का निर्माण किया।

मुस्लिमलीग की स्थापना के प्रतिक्रिया स्वरूप सम्प्रदाय के आधार पर 1916 में हिन्दू महासभा का उदय हुआ जिसके अध्यक्ष सावरकर ने कहा - हिन्दू महासभा का उद्देश्य हिन्दू जातियों, संस्कृति तथा हिन्दू सभ्यता की देखभाल, रक्षा, विकास और हिन्दू राष्ट्र के गौरव में वृद्धि और पूर्ण स्वराज की प्राप्ति हो।

इसी साम्प्रदायिक आधार का परिणाम R.S.S., विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय जनसंघ, अकाली दल जैसी संगठन और राजनीतिक पार्टियाँ रही है।

तीसरी धारा :-

जहाँ प्रथम और द्वितीय धारा की उत्पत्ति में सबको लेकर चलो और सम्प्रदायवाद की अवधारणा परिलक्षित होती दिखाई दी वहीं तीसरी धारा में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति का आधार सर्वहारा वर्ग की कल्याण की अवधारणा पर आधारित है। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवर्तक मुख्य रूप से एम. एन. रॉय, अवनी मुखर्जी, और ए. पी. बी आचार्य रहे है। कम्युनिस्ट धारणा का प्रतिपादन जर्मन मूल के कार्ल मार्क्स ने किया जिसका आधार आर्थिक आधार पर बुर्जुवा और सर्वहारा वर्ग की संघर्ष की स्थिति रही है। भारतीय कम्युनिस्ट मानता था कि भारत में केवल अंग्रेजों द्वारा ही भारतीय का शोषण नहीं किया जा रहा है। भारत के अन्दर भी एक ऐसा वर्ग है, जो अंग्रेज चले भी जाते है तो भी वे भारतीयों का शोषण करते रहेंगे अत: हमारी लड़ाई केवल अंग्रेजो के विरूद्ध ही नहीं वरन् वर्तमान व्यवस्था में मौजूद सभी बुर्जुवा वर्ग से है। रॉय के अनुसार कॉंग्रेस के भीतर भी कुछ बुर्जुवा वर्ग है अत: भारत में कम्युनिस्ट पार्टी होना चाहिए। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 26 Dec 1924 को की गई परन्तु यह माना जाता है कि इस पार्टी का गठन 1920 में ही ~~किया~~ किया गया था।

परन्तु भारत में कम्युनिस्ट पार्टी एक अच्छा जनाधार तैयार कर पाने में असमर्थ रही इसका कारण कॉंग्रेस की बेदाग छवि, अच्छा व्यक्तित्व, इतिहास और साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध के समय रूस द्वारा इंग्लैंड के सहयोग देने से भारतीयों द्वारा की जाने वाली समर्थन में कमी का होना था। बाद में भारत में दो तरह के कम्युनिस्ट हो गए - कम्युनिस्ट माओवादी और कम्युनिस्ट मार्क्सवादी

चौथी धारा :-

इस धारा में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति का आधार सामाजिक न्याय और मिश्रित अर्थव्यवस्था रही है। इसके प्रारम्भिक ने जयप्रकाश नारायण, लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव रहे है। ~~इसके~~

Scanned by CamScanner

कॉंग्रेस के अन्दर एक ऐसा समुदाय था जो कि समाजवादी सिद्धान्तों में विश्वास करता था, ने कॉंग्रेस के भीतर ही 1934 में कॉंग्रेस सोशलिस्ट की स्थापना की। जो बाद में 1948 में सोशलिस्ट पार्टी बना। तब यह कॉंग्रेस से पूरी तरह पृथक् हो गया क्योंकि कॉंग्रेस ने एक प्रस्ताव के द्वारा यह निश्चय किया कि कॉंग्रेस के अन्तर्गत रहकर किसी तरह का राजनीतिक दल का निर्माण नहीं किया जा सकता है और हेक्टर अभ्यावर्द्धन इसके अध्यक्ष बने।

1952 में जे॰बी॰ कृपलानी के किसान मजदूर प्रजा पार्टी के साथ मिलकर भारतीय सोशलिस्ट पार्टी ने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (PSP) का गठन किया।

1955 में राम मनोहर लोहिया ने PSP से अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी (लोहिया) बनाया।

1964 में PSP से अलग होकर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (SSP) बना।

1972 में SSP का विलय PSP के साथ हुआ और सोशलिस्ट पार्टी बना।

यह तीसरे बार था जब सोशलिस्ट पार्टी के नाम से इसका गठन हुआ। और नये नेता के रूप में जार्ज फर्नांडिस उभरे। इसी समय जयप्रकाश के नेतृत्व में सोशलिस्ट पार्टी द्वारा इंदिरा गाँधी सरकार का विरोध हुआ।

1975 में भारतीय लोकदल और भारतीय जन संघ बना और 1977 में भारतीय लोक दल, भारतीय जनसंघ और सोशलिस्ट पार्टी ने मिलकर जनता पार्टी बनायी और 1977 में चुनाव लड़कर प्रथम बार केन्द्रीय स्तर पर गैर-कॉंग्रेसी सरकार के रूप में मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने।

1979 में जनता दल बना जिसके नेतृत्व में विश्वनाथ प्रताप

Scanned by CamScanner

सिंह प्रधानमंत्री बने फिर आर. जे. डी., जी. डी. यू., जनता दल, जनता दल सेकुलर, स. पा., लो. ज. पा., और ब. स. पा. बने।

5 अप्रैल 1980 को पूर्व जनसंघ पार्टी के सदस्यों ने नई दिल्ली में एक सम्मेलन किया और 6 अप्रैल को एक नई पार्टी 'भारतीय जनता पार्टी' बनाई। इस प्रकार आर. एस. एस., बी. जे. पी., वी. एच. पी. और भारतीय जनसंघ सामूहिक रूप से संघ परिवार कहलाते है।

पाँचवी धारा:-

दलों के उत्पत्ति के संबंध में यह पाँचवी और अंतिम धारा मानी जाती है जो कि क्षेत्रीय दलों से संबंधित है सबसे पहला क्षेत्रीय दल तमिलनाडु की जस्टिस पार्टी (1916) है जो मुख्य रूप से उत्तर भारत विरोधी पार्टी एवं द्रविस्तान की मांग, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का विरोध, मुख्य मुद्दा रहा है जिसके कारण क्षेत्रीय सहयोग मिला और आगे बढ़ा। ई. वी. रामास्वामी अय्यर (पेरियार) 1938 में इसके अध्यक्ष बनने। इससे पहले पी. त्यागराज इसके नेता रहे है।

1944 में द्रविड़ कझगम तथा 1949 में सी. एन. अन्नादुराई के नेतृत्व में द्रविड़ मुनेत्र कझगम (DMK) बना। इसी समय एम. करुणानिधि इसमें शामिल हुए और द्रविड़नाडु की मांग की जो बाद में तमिलनाडु के रूप में राज्य को प्राप्त किया।

1972 में द्रविड़ मुनेत्र कझगम का विभाजन हुआ, एम. जी. रामचन्द्रण के नेतृत्व में और ऑल इंडिया द्रविड़ मुनेत्र कझगम (AIDMK) बना। 1987 में रामचन्द्रण की मृत्यु के बाद जयललिता ने AIDMK का नेतृत्व संभाली।

Scanned by CamScanner

निष्कर्ष :-

इस प्रकार भारत में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति का एक लम्बा इतिहास रहा है यद्यपि यह ब्रिटीश सरकार की भाँति अपने प्रारम्भिक समय में परिपक्व नही रही है तथापि लोकतंत्र को सफल बनाने में भारतीय राजनीतिक दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति में पाँचवी और अन्तिम धारा जो कि क्षेत्रीय पार्टी के निर्माण से संबंधित है, सबसे अधिक देखी जा रही है। यद्यपि इन पार्टियों को क्षेत्रीय स्तर पर पर्याप्त समर्थन तो मिल रहा है परन्तु यह किसी ठोस विचारधारा के अभाव में स्वयं को एक मजबूत जनाधारित दल के रूप में स्थापित करने में असफल ही रही है।

Scanned by CamScanner

2. स्वतंत्र भारत में राजनीतिक दलों की प्रकृति को लिखें

उत्तर:- किसी भी शासन व्यवस्था में राजनीतिक दलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक राजनीतिक दलों की अपनी कुछ नीतियाँ, सिद्धान्त एवं विचारधाराएँ निश्चित होती हैं। इसी प्रकार भारतीय राजनीति में भी दलों की प्रकृति में ये तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद रही है।

भारतीय राजनीतिक दलों की प्रकृति स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जिस लोकसेवा भावना पर आधारित थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उसके स्वभाव और प्रकृति में पर्याप्त बदलाव उभरकर सामने आई है। अब राजनीतिक दल सत्ता तक पहुँचने का एक माध्यम बन गया है, सत्ता सुख प्राप्त करना उनका लक्ष्य बन गया है। अब सत्ता सिर्फ धन का भंडार बन चुका है। यह बहुत अधिक पैसा, उच्च स्थान और धन प्राप्ति का साधन बन गया है जिसके कारण राजनीतिक दल एवं उनके नेतृत्वकर्ता भ्रष्ट हो गए हैं। लार्ड एक्टन के शब्दों में; 'सत्ता इन्सान को भ्रष्ट बना देती है और सर्वसत्तावादी है तो वह पूरी तरह भ्रष्ट हो जाता है।'

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीतिक दलों की प्रकृति में निम्न तथ्य उभरकर सामने आई है:-

1. सत्ता प्राप्ति का माध्यम:-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति का एक माध्यम बन गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जहाँ राजनीतिक दल लोक सेवा एवं देश के नागरिकों की अधिकार की बात करते थे वही वर्तमान परिस्थितियाँ ठीक उसके विपरीत है। सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीतिक दल सभी नैतिक-अनैतिक साधनों का प्रयोग करने में पीछे नहीं हटते हैं।

Scanned by CamScanner

2. राजनीतिक दलों में मूल्यों की ह्रास:-

पहले राजनीतिक दलों की राजनीति राष्ट्र के लिए हुआ करती थी परन्तु अब राजनीति स्वार्थ सिद्धि के लिए ही की जाती है। जहाँ पहले हर राजनीतिक दलों की एक मूल्य होती थी जैसे- नैतिकता के साथ सरकार के कामों का निर्वहन करेंगे, भ्रष्टाचार को साधन नहीं बनाएँगे, वहीं आज के राजनीतिक दल मूल्य रहित हो गई है। चुनाव जीतने और मंत्री बनने के लिए किसी भी प्रकार के अनैतिक, भ्रष्टाचार, धनबल जैसे साधनों का प्रयोग प्रायः सभी राजनीतिक दलों की मनोवृत्ति बन गई है।

3. आदर्शों का अभाव :-

राजनीतिक दल प्रायः आदर्शविहीन हो गए हैं। सभी राजनीतिक दल प्रायः अवसरवादी हो गए हैं। एक ओर अगर आदर्श की बात की जाय और दूसरे ओर अवसर की, तो राजनीतिक दल स्वतः ही अवसर की ओर खींचता चला जाता है। हर पार्टी को सत्ता पक्ष में आकर मंत्री पद प्राप्त करने का अवसर तलाश रहती है।

4. पार्टी में लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव :-

राजनीतिक दलों पर यह दारोमदार होता है कि देश में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बहाल करें परन्तु आज पार्टी के अन्दर ही लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव देखने को मिलता है। पार्टी अपने अन्दर अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव आदि पदों का चुनाव लोकतांत्रिक पद्धति से नहीं कराते हैं

5. गठबंधन की सरकार :-

80 के दशक के अन्त से गठबंधन की सरकार बनना प्रारम्भ हुआ, इसका प्रमुख कारण किसी भी राजनीतिक दलों को पूर्ण बहुमत जुटाने में असमर्थता है

Scanned by CamScanner

असमर्थ इसलिए हुए क्योंकि राजनीतिक दलों में कोई नैतिकता, आदर्श, मूल्य जैसी तत्व प्रायः लुप्त हो चुकी है जिससे जनता उनसे क्षुब्ध हो रही है और किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पा रही है। गठबंधन सरकार मतदाताओं की पसंद नहीं मजबूरी है।

6. जनता के साथ संबंधों में कमी :-

राजनीतिक दल और जनता के बीच संबंधों में निरन्तर कमी आई है इसका सर्वप्रमुख कारण, कार्यकर्ताओं की पद प्राप्ति की लालसा है। पार्टी के अन्दर पद लोलुपता हावी हो गई है और जनता से उनका ध्यान हट रहा है। पार्टी कार्यकर्ता की मंशा पद, टिकट तक सीमित होकर रह जाती है और जनता से उनका सम्पर्क बहुत ही नगण्य रह गई है

7. राजनीतिक अपराधिकरण :-

राजनीतिक दलों ने राजनीतिक अपराधिकरण को बढ़ावा दिया है। बहुत से राजनीतिक दल ऐसे है जिन्होंने अपराध को बढ़ावा दिया है साथ ही इसी के बल पर सत्ता भी प्राप्त किया है।

8. निर्दलीय उम्मीदवारों का उभरना :-

पिछले कई दशकों से निर्दलीय उम्मीदवारों की होड़ देखने को मिल रही है इसका कारण किसी एक व्यक्ति को पार्टी टिकट नही देती है तो वह निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़ा होते है। साथ ही पार्टी द्वारा कभी-कभी किसी दूसरे पार्टी को हराने के लिए भी कुछ व्यक्ति को निर्दलीय उम्मीदवार खड़ा कर स्वयं का स्वार्थ साधते है।

निष्कर्ष :-

इन सबके बावजूद भारत में लोकतांत्रिक

Scanned by CamScanner

व्यवस्था कायम है। भारत विविधता वाला देश है यहाँ भाषा, धर्म, क्षेत्र आदि को लेकर दल को चलना होता है जो आसान नहीं है, इसके लिए होनहार, मेधावी लोगो को राजनीति में होना चाहिए जिसका भी भारतीय राजनीति में अभाव है। इन सबके बावजूद हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था में हार के बाद उम्मीदवार या सत्ता पक्ष - विपक्ष इसे स्वीकार करते है, यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीतिक दलों की प्रकृति में पर्याप्त बदलाव आया है तथा भारत अब विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र से विश्व के आदर्श लोकतंत्र की ओर अग्रसर हो रहा है।

Scanned by CamScanner

2. भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना और उसके सिद्धान्तों पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर :-

18 वीं शताब्दी में भारत में पुनर्जागरण आन्दोलन चल पड़ा था जिसमें लोगों के मन में गुलामी से मुक्ति, देश के समस्याओं से अवगत होना आदि बाते लोगों के मन में जागृत होने लगी थी। अब लगने लगा था कि इन कार्यों के लिए एक संगठन का होना बहुत ही जरूरी है। जिसका परिणाम भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस था जो कि प्रारम्भ में एक संगठन था परन्तु बाद में यह भारत में राजनीतिक दल के रूप में परिणत हो गया।

28 दिसम्बर 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना हुई। उस समय के 72 राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने बंबई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में इसकी नींव रखी। अखिल भारतीय स्तर पर यह भारतीय राष्ट्रवाद की पहली सुनियोजित अभिव्यक्ति थी। एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज आई. सी. एस. अधिकारी ए० ओ० ह्यूम ने कॉंग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसकी बैठक मुम्बई में हुई जिसकी अध्यक्षता डब्लू. सी. बनर्जी ने की। प्रारम्भिक समय में कॉंग्रेस मूल रूप से एक संगठन था न कि एक राजनीतिक दल। जिसका उद्देश्य भारतीयों को गैर सरकारी संसद के रूप कार्य करना था। शुरू में इसे ब्रिटीश शासकों का समर्थन प्राप्त था, लेकिन थोड़े समय ही कॉंग्रेस द्वारा ब्रिटीश साम्राज्य की आलोचना तथा स्वराज की मांग ने ब्रिटीश शासकों का रुख

Scanned by CamScanner

बदल दिया। जब कॉंग्रेस ने प्रान्तीय चुनावों में भाग लेना आरम्भ कर दिया और धीरे-धीरे इस राजनीतिक के नेतृत्व में भारत में स्वतंत्रता को प्राप्त किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कॉंग्रेस एक राजनीतिक दल के रूप में परिवर्तित हो गया। कॉंग्रेस की मुख्य विशेषता "सबको लेकर चलो" की रही है। इसलिए पामर ने कहा कि कॉंग्रेस का उदय एक छत्र संगठन (An umbrella-orgnization) के रूप में हुआ जिसका अर्थ है कि कॉंग्रेस ने सभी वर्गों, जातियों, समुदायों के मानने वाले को अपने में समा लिया।

एक राजनीतिक दल के रूप में ~~सत्ह~~ कॉंग्रेस के ~~मुख्~~ प्रमुख सिद्धान्तों एवं कार्यक्रमों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है :-

I. धर्मनिरपेक्षतावाद अर्थात सभी धर्मों के प्रति समान सद्भाव तथा राज्य के कार्यों में धर्म के हस्तक्षेप की मनाही। विविधता में एकता के रूप में आस्था।

II. समाज का समाजवादी प्रतिमान अर्थात समाज के दुर्बल व पिछड़े वर्गों के हितार्थ कार्य करना, जनहित में निजी सम्पत्ति पर राज्य का नियंत्रण तथा महत्वपूर्ण धन्धे का राष्ट्रीयकरण होना, मिश्रित अर्थव्यवस्था की प्रशंसा

III. संसदीय शासन प्रणाली में आस्था, देश में बहु-दलीय व्यवस्था, खुले व स्वच्छ चुनाव, प्रेस की स्वतंत्रता, सीमित व उत्तरदायी शासन, विसम्मति की अनुमति।

Scanned by CamScanner

1. ii) नियोजन के माध्यम से देश का आर्थिक व सामाजिक कल्याण करना
iii) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा की नीति बनाना, गुट-निरपेक्ष आन्दोलन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ को पूर्ण समर्थन देना
iv) उपनिवेशवाद, जातीय भेदभाव, नस्लवाद, सम्प्रदायवाद आदि का खण्डन करना तथा अन्य गैर-साम्प्रदायिक दलों, गुटों व तत्वों के सहयोग से मिली-जुली सरकार बनाना।
v) सभी देशवासियों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने तथा सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने हेतु राजनीतिक स्थायित्व पर बल देना।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना एक सुरक्षावाल्व के रूप में अंग्रेजों के प्रयास से हुई। परन्तु देश के समस्याओं और भारत के बुद्धिजीवियों ने इसे स्वतंत्रता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण मंच बनाने का कार्य किया। जिसका अधिवेशन देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक वर्ष के दिसम्बर में आयोजित होता था। इसका तत्कालीन लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति करना था। कॉंग्रेस के नेतृत्व में भारत को स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई और स्वतंत्रता के बाद भारत के महत्वपूर्ण राजनीतिक दल के रूप में स्थापित हुई जो इस विविधतापूर्ण देश को एक साथ बनाए रखने वाले विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों के साथ वर्तमान तक बनी हुई है।

Scanned by CamScanner

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राजनीतिक दल के लिए कौन-सा तत्व अनिवार्य नहीं है?
   a. विचारधारा b. शक्ति प्राप्ति की इच्छा
   c. लोकतांत्रिक स्वरूप d. संगठनात्मक भाव

उत्तर - (c) लोकतांत्रिक स्वरूप

2. "मतो की गणना नही की जानी चाहिए उन्हे तौला जाना चाहिए" किसने कहा?
   a. जे. एस. मिल b. जे. बेन्थम c. एम. गाँधी d. डॉ. अम्बेडकर

उत्तर - a. जे. एस. मिल

3. 'स्वराज दल' की स्थापना की थी -
   a. बाल गंगाधर तिलक ने b. गाँधी जी ने
   c. सी. आर. दास d. मौलाना अबुल कलाम आजाद

उत्तर :- (c) सी. आर. दास

4. काँग्रेस अध्यक्षा चुनी जाने वाली विदेशी महिला कौन थी?
   a. श्रीमति एनी बेसेन्ट b. भगिनी निवेदिता
   c. कुमारी स्लेड d. लेडी माउन्टबेटन

उत्तर (a) श्रीमति एनी बेसेन्ट

5. संसदीय सरकार किसके बिना नही चल सकती?
   a. लिखित संविधान b. नियमित चुनाव
   c. राजनीतिक दल d. जागरूक नेतृत्व

उत्तर :- c. राजनीतिक दल

Scanned by CamScanner

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

6. अन्तरिम सरकार 14 अगस्त, 1946 को किसके नेतृत्व में बनी थी?
a. सरदार वल्लभभाई पटेल b. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
c. गोविन्द वल्लभ पंत d. जवाहर लाल नेहरू

उत्तर:- d. जवाहर लाल नेहरू

7.
a. भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस 1. सी. आई. टी. यू.
b. भारतीय जनता पार्टी 2. ए. आई. टी. यू. सी.
c. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी 3. बी. एम. एस.
d. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) 4. आई. एन. टी. यू. सी.

उत्तर:- a-4, b-3, c-2, d-1.

8. राष्ट्रीय दल की मान्यता के लिए यह आवश्यक है उसे पिछले चुनाव में कम से कम -
a. वैध मतों का 10% चार या अधिक राज्यों में प्राप्त हों।
b. वैध मतों का 4% चार या अधिक राज्यों में प्राप्त हों।
c. वैध मतों का 15% दो राज्यों में प्राप्त हों।
d. वैध मतों का 25% एक राज्य में प्राप्त हों।

उत्तर:- b - वैध मतों का 4% चार या अधिक राज्यों में प्राप्त हों।

9. भारत में राजनीतिक दलों का पंजीयन होता है?
a. संविधान के अनुच्छेद 324 के प्रावधानों के अनुसार
b. जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के प्रावधानों के अनुसार
c. स्वयं चुनाव आयोग के निर्णय के अनुसार
d. चुनाव आयोग द्वारा मंत्रीमण्डल की राजनीतिक मान्यता

Scanned by CamScanner

की समिति से विमर्श के पश्चात लिए गए निर्णय के अनुसार

उत्तर :- b. जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के प्रावधानों के अनुसार

10. राजनीतिक दलों के सिद्धान्त के सन्दर्भ में, निम्नलिखित में से किसका प्रतिपादन मारिस डुवर्जर द्वारा किया गया?

a. द्वि-दलीय व्यवस्था b. संरचना के आधार पर चतुर्वर्गीय वर्गीकरण
c. संवर्ग (काडर) पर आधारित दल d. मिली जुली बहुदलीय व्यवस्था

उत्तर :- b. संरचना के आधार पर चतुर्वर्गीय वर्गीकरण

11. किसने राजनीतिक गठबंधन के अपने सिद्धान्त में आकार के सिद्धान्त को प्रस्तुत की?

~~उत्तर~~. a. विलियम राइकर b. गौब्रियल आलमण्ड
c. लुसियन पाई d. वी. ओ. के

उत्तर :- विलियम राइकर

12. किसने राजनीतिक दल को 'अल्पतंत्र के लौह नियम' के रूप में परिभाषित किया?

a. लेनिन b. मिशेल्स c. डेविड ईस्टर d. एम. डवर्जर

उत्तर - b. मिशेल्स

Scanned by CamScanner